'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

पंचसखा कौन थे और 'भविष्य मालिका' क्या है? पंचसखा किस तरह विशिष्ट थे? क्यों विश्वास किया जाये उनकी लिखी बातों पर? क्या टल भी सकती हैं 'मालिका' की भविष्यवाणियां? 'मालिका' की रचना हेतु पंचसखाओं के क्या उद्देश्य थे?

(a) पंचसखा कौन थे? 'भविष्य मालिका' क्या है?

पंचसखा भगवान श्रीहरि के पांच परम शिष्य एवं सखा हैं जो हर युग में जन्म लेते हैं और प्रभु के धर्म-संस्थापना के कार्य में अपना योगदान करते हैं। प्रत्येक युग में वे कौन थे यह समझते हैं मालिका के एक श्लोक से -

ସତ୍ୟଯୁଗରେ ଋଷି କୃପାଜଳ, ତ୍ରେତୟା ସଖାଟି ଅଟଇ ନଳ।
ଦ୍ୱାପରେ ସୁଦାମ ସଖାଟି ହୋଇ, କଳିଯୁଗରେ ଅଚ୍ୟୁତ ବୋଲାଇ।।

ଗାର୍ଗବ ଋଷି ସତ୍ୟଯୁଗେ ହେଲେ, ତ୍ରେତୟା ଜାମ୍ବେବ ନାମ ବହିଲେ।
ଦ୍ୱାପରେ ସୁବାହୁ ବ୍ରଜ ହୋତି, ଯଶୋବନ୍ତ ନାମ କଳିରେ ଘେତି।।

ସତ୍ୟଯୁଗରେ ସ୍ୱୟଂଭୁ ସୁଜାଣ, ତ୍ରେତୟାରେ ହୋଏ ସେହୁ ଶୁଷେଣ।
ଗୋପେ ଶ୍ରୀବତ୍ସ ଦ୍ୱାପରେ ଜାତ, କଳିଯୁଗକୁ ସେ ହୋଏ ଅନନ୍ତ।।

ସତ୍ୟଯୁଗେ ସେହୁ ନାରଦ ଋଷି, ତ୍ରେତାରେ ନୀଳ ନାମକୁ ପ୍ରକାଶି।
ଦାମ ଗୋପାଳ ଦ୍ୱାପରଯୁଗରେ, ବଳରାମ ଦାସ ସେହୁ କଳିରେ।।

ମାରକଣ୍ଡ ଯେହୁ ସେ ହନୁମାନ, ସୁବଳ ସଖା ସେ ଦ୍ୱାପରେ ଜାଣ,
ଜଗନ୍ନାଥ ଦାସ କଳିରେ ହେଲେ, ପଞ୍ଚସଖାଏ ଯେହେଁ ପ୍ରକାଶିଲେ।।

सत्ययुगरे ऋषि कृपाजल, त्रेतया सखाटि अटइ नल।
द्वापरे सुदाम सखाटि होइ, कलियुगरे अच्युत बोलाइ।।

गार्गब ऋषि सत्ययुगे हेले, त्रेतया जांबेब नाम बहिले।
द्वापरे सुबाहु ब्रज होति, जशोबंत नाम कलिरे घेति।।

सत्ययुगरे स्वयंभु सुजाण, त्रेतयारे होए सेहु शुषेण।
गोपे श्रीबत्स द्वापरे जात, कलियुगकु से होए अनंत।।

सत्ययुगे सेहु नारद ऋषि, त्रेतारे नील नामकु प्रकाशि।
दाम गोपाल द्वापरयुगरे, बलराम दास सेहु कलिरे।।

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

मारकंड जेहु से हनुमान, सुबल सखा से द्वापरे जाण।
जगन्नाथ दास कलिरे हेले, पंचासखाए जेन्हे प्रकाशिले।।

मालिका ग्रंथ 'पंचसखा उदय कहानी' में महापुरुष अच्युतानंद दास ने लिखा कि सत्ययुग में पंचसखाओं ने कृपाजल, नारद, मार्कण्डेय, गार्गव और स्वयंभू का रूप लिया तो त्रेता में वे नल, नील, हनुमान, जाम्बवान और सुषेण बनकर आये। द्वापर में जहां वे सुदाम, दाम, सुबल, सुबाहु और श्रीवत्स हुए तो कलियुग में आज से लगभग 600 साल पहले ओडिशा की धरती पर वे ही क्रमशः अच्युतानंद दास, बलराम दास, जगन्नाथ दास, जशोबंत दास और शिशु अनंत दास के नाम से विख्यात हुए।

श्री चैतन्य महाप्रभु के समकालीन रहे इन पंचसखाओं ने अपने योगबल एवं दिव्यदृष्टि से 185,000 से भी ज्यादा ग्रंथों की रचना की। इन 185,000 ग्रंथों में 318 वे ग्रंथ थे जिनमें भविष्य के बारे में लिखा गया था। इन्हें ही 'भविष्य मालिका' कहा गया।

(b) पंचसखा किस तरह विशिष्ट थे?

पंचसखा विशिष्ट ही नहीं, अतिविशिष्ट थे क्योंकि उन्होंने प्रभु के अंश से जन्म लिए थे। वे प्रभु के अंशावतार ही थे। इसे मालिका के एक श्लोक से समझते हैं -

ଅଚ୍ୟୁତ ବୋଲିଣ କଳିଯୁଗେ ନାମ ସୁଦାମ ସଖା ଅଟନ୍ତି,
ଶ୍ରୀଅଙ୍ଗରୁ ଜାତ କଟିରୁ ଭକତ ଶୁଣ ହୋ ବାରଙ୍ଗ ଚେତି।
ମୁଖୁଁ ଯଶୋବନ୍ତ ହୃଦୁଁ ଆମ୍ଭେ ଜାତ ବାହୁ ମୂଁଳୁ ବଳରାମ,
ରାଧାଙ୍କ ହାସ୍ୟରୁ ଜଗନ୍ନାଥ ଦାସ ବାରଙ୍ଗ ହେତୁରେ ଘେନ।

अच्युत बोलिण कलियुगे नाम सुदाम सखा अटंति,
श्रीअंगरु जात कटिरु भकत शुण हो बारंग चेति।
मुखुँ जशोबंत हृदुँ आम्भे जात बाहु मूँलु बलराम,
राधांक हास्यरु जगन्नाथ दास बारंग हेतुरे घेन।

पंचसखाओं में एक, महापुरुष शिशु अनंत दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'चुंबक मालिका' में शिष्य बारंग को बताते हुए लिखा कि कलियुग में अच्युतानंद दास वही हैं जो द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण के सखा सुदाम थे और उन्होंने प्रभु की कटि से जन्म लिया है। जशोबंत दास प्रभु के श्रीमुख से जन्मे हैं, शिशु अनंत दास यानी वे खुद, प्रभु के हृदय से जन्मे हैं एवं बलराम दास ने प्रभु की बाहु से जन्म लिया है। उन्होंने आगे बताया कि जगन्नाथ दास मां राधारानी के हास्य से अवतरित हुए हैं।

(c) क्यों विश्वास किया जाए पंचसखाओं द्वारा लिखी बातों पर?

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

पंचसखाओं ने अपने मालिका ग्रंथों में इस बात को कई बार लिखा है कि "यह हमारी नहीं, बल्कि प्रभु की वाणी है। भगवान निराकार के निर्देश से ही हमने सारी बातें लिखी हैं।"

उदाहरण के लिए हम मालिका के कुछ श्लोक लेते हैं -

ମୁଁ କହୁଛି ବୋଲି ମୋର କଥା ନୁହେଁ ଆଦ୍ୟୁ ଖଞ୍ଜିଛନ୍ତି ଧାତା,
କର୍ମ ବାମ ହେଲେ କଳ୍ପନା ଗ୍ରାସିବ ପ୍ରକୃତି କାଟିବେ ଚିତ।

मुं कहुछि बोलि मोर कथा नुहें आद्‌यु खंजिछंति धाता,
कर्म बाम हेले कल्पना ग्रासिब प्रकृति काटिबे चिता।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'शिबकल्प नबखंड निर्घन्ट' में लिखा कि "जो कुछ भी मैं लिख रहा हूं वह मेरी वाणी नहीं है। यह सब प्रभु द्वारा पहले से ही निर्धारित चीजें हैं।"

ଶ୍ରୀ ଅଚ୍ୟୁତ ଦାସ ନେମାଳେ ନିବାସ ପଦ୍ମବନେ ତାଙ୍କ ସ୍ଥିତି,
ପ୍ରଭୁଙ୍କ ଆଜ୍ଞାରୁ ଅନୁଭବ କର ଲକ୍ଷେ ଗ୍ରନ୍ଥ କରିଛନ୍ତି।

श्री अच्युत दास नेमाले निबास पद्मबने तांक स्थिति,
प्रभुन्क आज्ञारु अनुभव कर लक्षे ग्रंथ करिछंति।

महापुरुष शिशु अनंत दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'चुंबक मालिका' में लिखा कि अच्युतानंद दास ने ओडिशा के नेमाल (पद्मवन) नामक स्थान में ध्यान की अवस्था में प्रभु की आज्ञा से अनुभव कर लाख ग्रंथों की रचना की है।

ଆହୁରି କଥାଏ ଶୁଣରେ ବାରଙ୍ଗ ହେତୁ ରଖ ଯାକୁ ସାର,
ଭାବବିନୋଦିଆ ହରିଙ୍କି ଏ ବାଣୀ ଅଟେ ସିନା ଅଗୋଚର।

आहुरि कथाए शुणरे बारंग हेतु रख याकु सार,
भाबबिनोदिआ हरिंकि ए वाणी अटे सिना अगोचर।

शिष्य बारंग को समझाते हुए महापुरुष शिशु अनंत दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'पट्टा मड़ाण' में लिखा कि जो कुछ वे लिख रहे हैं वह उनकी वाणी नहीं, बल्कि भगवान श्रीहरि की वाणी है।

(d) क्या मालिका की भविष्यवाणियां टल सकती हैं?

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

जैसा हमने इसके पहले देखा, मालिका की वाणी प्रभु की वाणी है जिसे प्रभु ने ही अपने पंचसखाओं के माध्यम से अपने भक्तों के लिए लिखवाया। यही कारण है कि मालिका की वाणी कभी टल नहीं सकती या गलत नहीं हो सकती।

ପୃଥ୍ୱୀ ଦୁଇଫାଳ ହେଲେ ହୋଇବ, ପୂର୍ବ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅବା ପଶ୍ଚିମେ ଯିବ।
ପର୍ବତ ଶିଖରେ ଫୁଟିବ କଇଁ, ଅଚ୍ୟୁତୀ ବଚନ ମିଥ୍ୟା ନୁହଁଇ।
ଅଚ୍ୟୁତୀର ବାଣୀ ଅଟେ ପଥରର ଗାର, ଆନକରିବାକୁ ନାହିଁ ଶକତି କାହାର।

पृथ्वी दुइफाल हेले होइब, पूर्व सूर्य अबा पश्चिमे जिब।
पर्वत शिखरे फुटिब कइं, अच्युती बचन मिथ्या नुहंइ।
अच्युतीर बाणी अटे पथरर गार, आनकरिबाकु नाहिं शकति काहार।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'चकड़ा मड़ाण' में लिखा कि "पृथ्वी दो भागों में विभक्त हो सकती है, पूर्व दिशा में उदित होने वाला सूर्य पश्चिम दिशा में उदित हो सकता है, पर्वत के शिखर पर कमल का फूल खिल सकता है, लेकिन अच्युतानंद की लिखी एक भी वाणी गलत नहीं हो सकती। अच्युतानंद की वाणी पत्थर की लकीर है जिसे मिथ्या करने की शक्ति किसी के भी पास नहीं है।"

(e) मालिका की रचना में क्या थे पंचसखाओं के उद्देश्य?

ହେତୁ ରସାଇବା ପାଇଁକି ଅଚ୍ୟୁତ ଶାହାସ୍ତ୍ର ପୁରାଣ କଲା,
କଳିକାଳଠାରୁ ବଳି କାଳ ଯହିଁ ହକ କଥାଟା ଲେଖିଲା।

हेतु रसाइबा पाइंकि अच्युत शाहास्त्र पुराण कला,
कलिकालठारु बलि काल जहिं हक कथाटा लेखिला।

मालिका ग्रंथ 'शिबकल्प नबखंड निर्घन्ट' में महापुरुष अच्युतानंद दास ने लिखा कि कलियुग-अंत में भक्तों की सोयी चेतना जगाने के लिए वे मालिका ग्रंथों की रचना कर रहे हैं ताकि घोर कलियुग में प्रभु के चारों युगों के भक्त 'मालिका' के माध्यम से महाप्रभु कल्कि तक पहुंच सकें। भक्त और भगवान का मिलन हो सके। इस हेतु ही वे कलियुग से संगमयुग और संगमयुग से आने वाले सत्ययुग तक की सारी घटनाओं की भविष्यवाणियां मालिका ग्रंथों में लिख रहे हैं।

2) कलियुग की भोग आयु कितनी है? पंचसखाओं ने अपने मालिका ग्रंथों में इस बारे में क्या लिखा है?

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

କଲି ଚାରି ଲକ୍ଷ ବତ୍ରିଶ ସସ୍ର ନୋହିବ ଭୋଗ,
ପାପ ଯୋଗୁଁ କ୍ଷୟ ହୋଇବ ଅଳ୍ପ ପଡ଼ିବ ଭାଗ।
ପାଞ୍ଚ ସହସ୍ର ଯେ ପଚାଶ ଭୋଗ ହେବ ନିକର,
ଏଥୁଁ କିଛି ଉଣା ହୋଇବ ଶୁଣ ଗରୁଡ଼ ବୀର।
ନୀଳାଚଳ ଆମ୍ଭେ ଛାଡ଼ିବୁ ନର ଦେହ ଧାରଣ,
ଯାଜପୁରଠାରେ ବଢ଼ିବୁ ବିଷ୍ଣୁଶର୍ମା ଘରଣ।

कलि चारि लक्ष बतिश सस्र नोहिब भोग,
पाप जोगुं क्षय होइब अल्प पड़िब भाग।
पांच सहस्र जे पचाश भोग हेब निकर,
एथुँ किछि उणा होइब शुण गरुड़ बीर।
नीलाचल आम्भे छाड़िबु नर देह धारण,
जाजपुरठारे बढ़िबु बिष्णुशर्मा घरण।

भगवान श्रीकृष्ण और भक्त शिरोमणि गरुड़ के बीच द्वापरयुग में हुए संवाद को आज से 600 साल पहले पंचसखा महापुरुषों ने अपनी दिव्यक्षमता से मालिका ग्रंथों में उद्धृत किया। इस वार्ता में स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं कि कलियुग का भोग 4,32,000 सालों का नहीं होगा। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले विभिन्न पापकर्मों के कारण 4,32,000 साल की यह परम आयु पांच हजार पचास (5,050) सालों के आसपास ही खत्म हो जाएगी। प्रभु ने आगे बताया कि तत्पश्चात वे जगन्नाथ रूप (ओडिशा के जगन्नाथपुरी में जिस रूप में विद्यमान हैं) को छोड़ (ओडिशा के) जाजपुर नामक एक स्थान में भगवान विष्णु का यशगान करने वाले एक पवित्र भक्त के घर मानव शरीर में जन्म लेंगे।

ଚାରି ଲକ୍ଷ ବତିଶ ସସ୍ର ବର୍ଷ,
କଳିର ଅଟଇ ଆୟୁଷ।
ପାପଭାରାରେ ଆୟୁ ତୁଟିଯିବ,
ପାଞ୍ଚ ସହସ୍ର କଳି ଭୋଗ ହୋଇବ।

चारि लक्ष बतिश सस्र बर्ष,
कलिर अटइ आयुष।
पापभारारे आयु तुटिजिब,

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

पांच सहस्र कलि भोग होइब।

पंचसखाओं में एक, महापुरुष अच्युतानंद दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'भक्त चेतावनी' में लिखा कि कलियुग की कुल आयु 4,32,000 वर्षों की है, परंतु कलियुग में मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न पापकर्मों की वजह से 4,32,000 वर्षों की यह आयु घटकर मात्र 5,000 वर्षों की रह जाएगी।

ଏବେ ପାଞ୍ଚ ଠିକ କହିବା ଶୁଣ,
ବାରଙ୍ଗ ବିଚାର ଚିତ୍ତରେ ଘେନ।
ପାଞ୍ଚ ସହସ୍ର ଯେତେବେଳେ ହେବ,
ସମ୍ପୂର୍ଣ ଲୀଳା ପ୍ରକାଶ ହୋଇବ।

एबे पांच ठिक कहिबा शुण,
बारंग बिचार चित्तरे घेन।
पांच सहस्र जेतेबेले हेब,
संपूर्ण लीला प्रकाश होइब।

पंचसखाओं में एक, महापुरुष शिशु अनंत दास ने अपने शिष्य बारंग दास को बताते हुए मालिका ग्रंथ 'महागुप्त पद्मकल्प' में लिखा कि कलियुग के 5,000 साल बीत जाने के बाद प्रभु अपनी संपूर्ण लीलाओं का प्रकाश करेंगे।

ସମ୍ବତ୍ସର ପାଞ୍ଚ ସହସ୍ର କଳି ହୋଇବ ଶେଷ,
ସତ୍ୟଯୁଗ ଆଦ୍ୟ ହୋଇବ ଶୁଭଯୋଗେ ପ୍ରବେଶ।

संबत्सर पांच सहस्र कलि होइब शेष,
सत्ययुग आद्य होइब शुभयोगे प्रबेश।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने इस कलियुग में कुल 13 बार जन्म लिये। इन तेरह जन्मों में उनका एक जन्म सन् 1772 में 'हाड़ि दास' के नाम से ओडिशा के जाजपुर जिले में हुआ। संत हाड़ि दास ने भी मालिका ग्रंथों की रचना की। अपने 'कलि चउतिशा' नामक मालिका ग्रंथ में उन्होंने लिखा कि पांच हजार सालों के बाद कलियुग का अंत हो जाएगा एवं तत्पश्चात 'आदि सत्ययुग' का प्रकाश होगा।

3) भगवान कल्कि कौन हैं? क्या भगवान कल्कि जन्म ले चुके हैं? यदि हां, तो भारत के किस राज्य में और किस स्थान पर?

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

भगवान विष्णु के 10 मुख्य अवतारों में 9 अवतारों की लीलाएं पहले ही समाप्त हो चुकी हैं। सिर्फ कल्कि अवतार की लीलाएं ही बाकी थीं। भगवान कल्कि का जन्म कलियुग के अंत में होना था और मालिका ग्रंथों के अनुसार अब कलियुग-अंत के साथ ही यह हो भी चुका है।

मालिका में लिखा है कि जब जगन्नाथ मंदिर से अशुभसूचक संकेत मिलने लगेंगे तब भक्तों को यह समझ जाना चाहिए कि कल्कि का जन्म हो चुका है। पिछले 20 सालों के भीतर हम मालिका-वर्णित सारे अशुभसूचक संकेतों को जगन्नाथ मंदिर से घटित होता पाते हैं। उदाहरण के लिए- मंदिर के ऊपर चील पक्षी का बैठना, तूफान के प्रभाव से मंदिर का नीलचक्र टेढ़ा हो जाना, चक्रवात में मंदिर के ऊपर लगे ध्वज का उड़कर समुद्र में गिरना, मंदिर से बार-बार पत्थरों का गिरना, इत्यादि।

भगवान कल्कि का जन्म भारत में कहां होगा, इस बारे में पंचसखाओं में एक, महापुरुष शिशु अनंत दास ने अपने ग्रंथ 'चुंबक मालिका' में लिखा-

କଲ୍କୀ ଅବତାରେ ଓଡ଼ିଶା ମଣ୍ଡଳେ ତୁମ୍ଭେ ଜନମ ହୋଇବ,
ଦୁଷ୍ଟ ଜନ ନାଶି ଭକ୍ତଙ୍କୁ ଆଶ୍ୱାସୀ ଧର୍ମକୁ ତୁମ୍ଭେ ପାଳିବ।

कल्कि अबतारे ओड़िशा मण्डले तुम्भे जनम होइब,
दुष्ट जन नाशि भक्तंकु आश्वासी धर्मकु तुम्भे पालिब।

अर्थात, कल्कि अवतार में प्रभु का जन्म ओडिशा में होगा। वे दुष्टों का नाश कर भक्तों का उद्धार कर धर्म की संस्थापना करेंगे।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने भी अपने ग्रंथ 'जाइफुल मालिका' में इस विषय पर चर्चा की। उन्होंने लिखा-

ସେହି ବେଳ କାଳ ଜାଣି,
ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଭୁ ଜନ୍ମିବେ ପୁଣି ଲୋ ଯାଇଫୁଲ,
କେହି ତାଙ୍କ ମାୟାକୁ ନ ଚିହ୍ନି।

सेहि बेल काल जाणि,
ओड़िशारे प्रभु जन्मिबे पुणि लो जाइफुल,
केहि तांक मायाकु न चिह्नि।

अर्थात, जब पाप अपने चरम पर होगा उसी समय महाप्रभु कल्कि का जन्म ओडिशा राज्य में होगा। उनकी मायाशक्ति इतनी प्रबल होगी कि उनके भक्तों को छोड़ अन्य कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा।

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

प्रभु का जन्म ओडिशा में किस जगह पर होगा, इस विषय में 'कलि आगत भविष्यांत' में पंचसखाओं में एक, महापुरुष बलराम दास लिखते हैं -

ଶୁଣ ବାଲିଆ ତୋତେ କହି, ଆମ୍ଭେ ଜନ୍ମିବୁ ଯେଉଁଠାଇଁ,
ତାହା କହିବା ତୋତେ ଶୁଣ, ଯେ ଯାଜପୁର ବୋଲି ଗ୍ରାମ।

शुण बालिआ तोते कहि, आम्भे जनमिबु जेउंठाइं,
ताहा कहिबा तोते शुण, जे जाजपुर बोलि ग्राम।

उपरोक्त श्लोक में महाप्रभु कल्कि बलराम दास को बता रहे कि "मैं जाजपुर नामक एक स्थान पर जन्म लूंगा।"

इसी विषय पर महापुरुष शिशु अनंत दास ने 'चुंबक मालिका' में शिष्य बारंग को समझाते हुए लिखा-

ଶୁଣ ହେ ବାରଙ୍ଗ କହିବା ସେ ରଙ୍ଗ ପ୍ରଭୁ ଅବତାର ସ୍ଥାନ,
ଶ୍ରୀ ବୀରଜା କ୍ଷେତ୍ରେ ଜନ୍ମ ଲଭିବେ ଅନନ୍ତ ମିଶ୍ର ଗୃହେଣ।

शुण हे बारंग कहिबा से रंग प्रभु अवतार स्थान,
श्री बीरजा क्षेत्रे जनम लभिबे अनंत मिश्र गृहेण।

अर्थात, महाप्रभु कल्कि बिरजा क्षेत्र यानी जाजपुर जिले में मां बिरजा मंदिर के क्षेत्र में अनंत मिश्र (सांकेतिक नाम) नामक एक ब्राह्मण के घर जन्म लेंगे।

4) कल्कि अवतार का उद्देश्य क्या है?

भगवान विष्णु के हर मुख्य अवतार की तरह कल्कि अवतार भी धर्मसंस्थापना के लिए हुआ है। सनातन ग्रंथों सहित मालिका में भी यही लिखा है कि कल्कि दुष्टों का संहार, संतों-साधुजनों का उद्धार एवं धर्म की संस्थापना करेंगे।

ମ୍ଲେଚ୍ଛ ନିଧନ ଦୁଷ୍ଟ ସଂହାରଣ,
କରିବେ ନିଶ୍ଚେ ଦେବ କଲ୍କୀ ରାମ।
ଏମନ୍ତ ମହୀ ଯେ ହେବ ଉଶ୍ୱାସ,
କଳିକଳ୍ପ କହେ ଅଚ୍ୟୁତ ଦାସ।

'भविष्य मालिका' के मुख्य तत्व

सुधर्मा महा-महा संघ (विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट)

म्लेच्छ निधन दुष्ट संहारण,
करिबे निश्चे देब कल्कि राम।
एमन्त मही जे हेब उश्वास,
कलिकल्प कहे अच्युत दास।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने आज से लगभग 600 साल पहले अपने मालिका ग्रंथ 'कलिकल्प गीता' में लिखा कि कलियुग-अंत यानी वर्तमान काल में भगवान कल्कि का अवतार होगा जो म्लेच्छों का विनाश, दुष्टों का संहार एवं संत-साधुजनों का उद्धार कर पृथ्वी पर धर्म की संस्थापना करेंगे।

ପାପ ଘୋଟିବାରୁ ଟାଣ ହୋଇବେ,
ଟାଣ ଭାଙ୍ଗିବାକୁ ପ୍ରଭୁ ଜନ୍ମିବେ।
ସେ ପାପ ନାଶିବେ ଶ୍ରୀ ଚକ୍ରଧର,
ଏଣୁ ହୋଇବେ କଲ୍କୀ ଅବତାର।

पाप घोटिबारु टाण होइबे,
टाण भांगिबाकु प्रभु जन्मिबे।
से पाप नाशिबे श्री चक्रधर,
एणु होइबे कल्कि अबतार।

महापुरुष अच्युतानंद दास ने अपने मालिका ग्रंथ 'चकड़ा मड़ाण' में लिखा कि कलियुग-अंत में पाप अपने चरम पर जाएगा, लोग महापापी, महाक्रूर और महादोषी हो जाएंगे। उच्छृंखलता में जीवन जीएंगे, गर्व, दंभ, अहंकार में चूर रहेंगे। तब भगवान श्रीहरि पृथ्वी पर कल्कि अवतार लेंगे, पाप का नाश कर धर्म की संस्थापना करेंगे।

पंचभूत-प्रलय, रोग-महामारी, विश्वयुद्ध इत्यादि के माध्यम से दुष्टों का संहार होगा जो मालिका के अनुसार तब होगा जब मीन राशि में शनिदेव का चलन होगा। यह चलन लगभग हर 30 वर्षों में होता है। लेकिन मालिका में ऐसे कई संकेत बताये गए हैं जिनसे हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ये सारी घटनाएं 2025-2028 के बीच होने वाले मीन-शनि चलन के समय ही होंगी।

उक्त कालखंड के बारे में मालिका द्वारा वर्णित अनेक संकेतों में एक यह है कि उस समय पुरी की राजगद्दी पर गजपति महाराज श्री दिव्यसिंह देव (चतुर्थ) नामक राजा आसीन रहेंगे। यह मालिका की सत्यता का एक प्रमाण है कि अभी ये ही पुरी के राजा हैं एवं चूंकि अभी उनकी आयु 70 से ज्यादा है और 30 साल बाद आने वाले अगले मीन-शनि योग के समय उनकी आयु 100+ रहेगी जिस समय राजगद्दी पर उनके बने रहने की

संभावना न के बराबर है, इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि धर्मसंस्थापना की सारी घटनाएं 2025-2028 के बीच व्याप्त रहने वाले मीन-शनि योग में ही संपन्न होंगी।

कलियुग और सत्ययुग के इस संधिकाल में हमें चाहिए कि हम धर्मपथ पर आ जाएं, पूरी तरह शाकाहार को अपनाएं, नित्य भागवत महापुराण का पाठ करें, त्रिसंध्या करें और भगवान कल्कि की शरण में रह उनके नाम 'माधव' का निरंतर जप करें।

यदि आप 'भविष्य मालिका' और उसकी भविष्यवाणियों के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं, आगे आनेवाले अत्यंत कठिन समय के दौरान सुरक्षित रहने के उपाय अपनाना चाहते हैं, भगवान कल्कि के दर्शन और सत्ययुग में प्रवेश पाना चाहते हैं तो कृपया निम्नलिखित यूट्यूब चैनल पर जाएं-

https://www.youtube.com/@Kalki_Avatara/videos

-गौरव भाई - 11.08.2024